International Journal of Education and Science Research Review
ISSN 2348-6457
www.ijesrr.org August- 2017, Volume-4, Issue-4 Email- editor@ijesrr.org

मन्नू भण्डारी के कथा साहित्य में नारी-विमर्श

डा०शिवम चतुर्वेदी
एसोसिएट प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष
हिन्दी विभाग
अरूणाचल यूनिवर्सिटी ऑफ स्टडीज
नामसाई, अरूणाचल प्रदेश।

लतारंजन
शोधार्थी
हिन्दी विभाग
अरूणाचल यूनिवर्सिटी ऑफ स्टडीज
नामसाई, अरूणाचल प्रदेश।

भारतीय नारी की मुक्ति के आन्दोलन का इतिहास बहुत पुराना है, यह अलग बात है कि तब उसे **'नारी-विमर्श'** या **'नारीवादी साहित्य'** जैसी संज्ञा से विभूषित नहीं किया गया था। किन्तु समय एवं परिस्थिति के अनुसार नारी की दशा को सुधारने एवं उन्हें प्रत्येक क्षेत्र में आगे लाने के सतत् प्रयास होते रहे हैं। स्वतन्त्रता के बाद से नारी-विमर्श एक गम्भीर विचार केन्द्रित मुद्दा रहा है। किन्तु बिडम्बना यह रही है कि इस विषय को छूते ही बड़े-बड़े बुद्धिमान व्यक्ति मानवीयता का आवरण उतार कर पुरूषवादी सुर अलापने लगते हैं। अक्सर यह विषय एक फैशनेबल बहस मात्र बनकर रह गया है। लेकिन विकास की प्रक्रिया धीमी हो सकती है, अवरूद्ध नहीं। इसीलिए फैशनेबल बहस बन जाने व अपने स्वरूप की सत्यता को खो देने के उपरान्त भी ऐसा चिन्तन चलता रहता है, जिसने नारी-विमर्श के बारे में भ्रान्तियों को दूरकर उसके सत्य को स्थापित ही नहीं किया बल्कि नारी-विमर्श की एक स्वस्थ व्याख्या की है। इन चिन्तकों में मन्नू भण्डारी की अग्रणी भूमिका रही हैं जिन्होंने अपने कथा-साहित्य के माध्यम से नारी जीवन के अनेक प्रश्नों पर तर्क संगत बात की है। वर्तमान में नारी विमर्श एक ज्वलन्त मुद्दा हो गया है। यह आज के समय में एक तरह से अब तक की परिभाषित नारी की भूमिका को बदलने वाला विमर्श भी है। इस विमर्श ने शताब्दियों से चली आ रही नारी की छवि को तोड़कर उसे आधुनिक समाज में एक अलग स्थान दिया है। नारी-विमर्श पुरूष विरोधी झण्डा लेकर आगे चलने वाला नकारात्मक विमर्श नहीं है। बल्कि एक स्वस्थ मानवीय दृष्टिकोण है। इसकी व्यापकता और विस्तार को स्पष्ट रूप से विवेचित और स्थापित करने वाला साहित्य मन्नू भण्डारी के कथा साहित्य में आया है।

नारी समाज का केन्द्र बिन्दु है। नारी के सामाजिक मूल्यों की परख समाज और साहित्य के पल-पल परिवर्तित परिवेश से ही हो सकती है। पूर्व प्रेमचन्द युग की नारी विलास और श्रंगार की गुड़िया मात्र थी। उसके हाथों में अपने जीवन की बागड़ोर नहीं थी- वह पुरूषों के हाथ की कठपुतली थी। प्रेमचन्द युग के उपन्यासों की नारी शिक्षित और जागरूक थी। जिसे अधिकार और कर्तव्यों का ज्ञान था।

आधुनिक साहित्य में मन्नू भण्डारी का अप्रतिम योगदान है। इनके साहित्य में समाज सापेक्षता, अन्याय-अत्याचार का विरोध, सार्थक मूल्यों की रक्षा का प्रयत्न दृष्टिगत होता है। कर्म और संघर्ष में उनका विश्वास है। लेखिका व्यावसायिक प्रतिबद्धता से अलग रहकर समसामाजिक लोक जीवन से जुड़ी रही है और उन्होंने जीवन की कठिन चुनौतियों को स्वीकार किया है।

मन्नू भण्डारी को व्यक्ति, परिवार, समाज, राजनीति, धर्म, प्रशासन एवं शिक्षा आदि क्षेत्रों की समस्याओं ने आलोड़ित किया है। मन्नू भण्डारी ने पारिवारिक सम्बन्धों की समस्याओं को दोहरे स्तर पर उद्घाटित किया है। संयुक्त परिवार के विघटन को **'ए खाने आकाश नाई'** छत बनाने वाले आदि कहानियों में तथा **'स्वामी'** उपन्यास में यथार्थता से उठाया है। मन्नू भण्डारी ने दाम्पत्य विघटन से आए अकेलेपन को **'आपका बन्टी' 'एक इन्च मुस्कान' 'उपन्यास'** तथा **'बन्द दराजों का साथ'** कहानी में सार्थकता से उठाया है।

स्वातन्त्रयोत्तर भारतीय समाज में स्वतन्त्रता प्राप्ति के उद्देश्य से मोहभंग हो गया है। राजनीति में भ्रष्ट नेतृत्व, वोट की नीति, आतंकवाद, भ्रष्टाचार आदि का वर्चस्व है। धर्म और जाति के नाम पर राजनीतिज्ञ वोट मॉगते हैं तथा साम्प्रदायिक दंगे कराते हैं। इस परिवेश में नारी हताश व निराश है। परन्तु शिक्षा ने नारी को एक नई चेतना प्रदान की है। अब नारी शिक्षित और जागरूक होकर राजनीति में भागीदारी करने लगी है। आधुनिक युग में जो परिवर्तन हुआ है, वह नारीवाद की ही उपज है। मन्नू भण्डारी ने अपने कथा साहित्य में **'मैं हार गई' 'हार'** आदि कहानियों में राजनीति की स्वार्थपरता, **'एक प्लेट सैलाब'** में राजनीतिक भ्रष्टाचार, परिवारवाद का वर्चस्व, **'महाभोज'** उपन्यास में विकृत राजनीति व टूटे हुए मूल्यों का चित्रण किया है।

स्वातन्त्रयोत्तर भारतीय समाज में स्त्री शिक्षा का प्रचार-प्रसार हुआ, पाश्चात्य शिक्षा के प्रति आकर्षण से नारी में नवीन चेतना आई है। पाश्चात्य शिक्षा से प्रभावित नारी की दृष्टि में वह पति की क्रीत दासी नहीं है, बल्कि उसका भी पति के समान अधिकार है। नारी ने सार्वजनिक क्षेत्र में कार्य किया और पुरूष के समान ही सफलता अर्जित की है।

महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए सरकार ने अनेक योजनायें प्रस्तुत की हैं। नारी सशक्तीकरण और नारी अस्मिता पाश्चात्य शिक्षा के प्रभाव से हर क्षेत्र में पदापर्ण कर रही है। आज एक ओर बड़ी संख्या में अशिक्षित औरतें हैं, जो पॉच-छः सौ रूपए महीने पर कार्य करती हैं। दूसरी ओर शिक्षित लडकियॉं हैं जिन्हें न तो रोजगार मिल रहा है और न ही उनका विवाह ही हो रहा है। अब नीति निर्धारकों को विचार करना चाहिए कि उच्च शिक्षित लड़कियों को रोजगार मिलना चाहिए जिससे वे आत्मनिर्भर हो सकें। मन्नू भण्डारी की **'दीवार बच्चे और बरसात'** आदि कहानियों की शिक्षित नारियॉं स्वतन्त्र विचार रखती हैं और आत्मनिर्भरता की समर्थक हैं। **'रेत की दीवार'** कहानी में बेरोजगारी **'यही सच है'** कहानी में साक्षात्कार के आडम्बर का चित्रण है। **'क्षय'** कहानी में ट्यूशन की समस्या है जबकि **'महाभोज'** उपन्यास में दलितों की शिक्षा पर बल दिया गया है।

स्वातन्त्रयोत्तर भारतीय समाज में संयुक्त परिवार विघटित हुआ है और एकल परिवारों का निमार्ण हो रहा हैं आज परिवार का दायित्व उसके हाथों में रहता है, जिसके आश्रय में परिवार का पालन-पोषण होता है। पितृसत्तात्मक व्यवस्था में नारी का हर अधिकार छिन गया है तथा बेटे और बेटी में अन्तर किया गया है। परिवार में नारी के साथ घरेलू हिंसा की जाती है। जिसकी शिकायत प्रायः स्त्रियॉं नहीं करती हैं। आज नौकरी करने वाली स्त्रियों को दोहरे दायित्व की पूर्ति करनी पड़ती है। मन्नू भण्डारी के कथा साहित्य में पारिवारिक चित्रण हुआ है। जिसमें पुरातन पीढ़ी और युवा पीढ़ी के विचारों में संघर्ष होता है। सामान्य परिवारों के नर-नारी जटिल जीवन स्थितियों के शिकार हो रहे हैं तथा सुख-सुविधाओं के पश्चात् भी घुटन, अकेलेपन, संत्रास का जीवन जीने के लिए विवश हैं।

स्वातन्त्रयोत्तर भारत की शिक्षित नारी घर-द्वार से बाहर कार्यक्षेत्र में भी जाने लगी है। इससे उसके जीवन में सम्बन्ध-विच्छेद, अवैध-प्रेम, यौन-अतृप्ति, पारिवारिक सामन्जस्य, पति-पत्नी सम्बन्ध निर्वाह और बच्चों के पालन पोषण की अनेक समस्यायें उत्पन्न होती हैं। पुरूष स्वच्छन्दता से प्रेमालाप करता है किन्तु नारी पर विश्वास नहीं करता है। नारी ने आर्थिक स्वाबलम्बन प्राप्त किया है तथा अनेक पदों पर प्रतिष्ठित हुई है। मन्नू भण्डारी के अपने कथा साहित्य में ऐसी अनेक नारियॉं हैं जो कामकाजी हैं, पति जब उनकी भावनाओं के साथ खिलवाड़ करते हैं तो उसे तलाक भी दे देती हैं।

स्वातन्त्रयोत्तर भारतीय समाज में विवाह संस्था की स्थिति में परिवर्तन आया है। आज नारी को प्रेम किसी से होता है और उसका विवाह किसी और से होता है। पितृसत्तात्मक स्थिति में बर चुनने का अधिकार जो माता-पिता को था, आज यह अधिकार लड़कियों के हाथ में आ गया है। पाश्चात्य शिक्षा के प्रभाव से नारी की मानसिकता बदली है, उसे भारतीय संस्कृति स्वीकार नहीं, वह सिर पर पल्ला नहीं रखना चाहती। स्वतन्त्र भारत में नारी के वैवाहिक विज्ञापनों में उसकी नौकरी भी दहेज का एक हिस्सा है। अब मीडिया और विज्ञापनों में नारी की छवि भारतीय नहीं है।

मन्नू भण्डारी ने अपने कथा साहित्य में पुरूष की अनिवार्यता को स्वीकार किया है। नारी सब कुछ होकर भी नारी है और नारी को एक साथी चाहिए, एक सहारा चाहिए, परिवार चाहिए और बच्चे चाहिए। इसके अतिरिक्त नारी में विवाह के प्रति प्रतिरोध भी उनके कथा साहित्य में चित्रित हुआ है।

आज नारी शोषण और अत्याचार का विरोध भी करती है। वैयक्तिक अस्मिता की रक्षा के लिए नारी संघर्ष करती है। नारियों ने जहॉं उच्च पदों पर आसीन होकर देश को गौरवान्वित किया है वहीं उनका आज भी दैहिक और मानसिक शोषण हो रहा है। मन्नू भण्डारी ने स्त्री लेखन को एक नया अर्थ देते हुए स्त्री अस्मिता के प्रश्न को बड़ी गम्भीरता के साथ चित्रित किया है। लेखिका पारम्परिक स्त्रीत्व से मुक्त करके नारी को वैयक्तिक अस्मिता का बोध कराना चाहती है, जिससे उनमें सर्वदा एक बोल्डनैस विद्यमान रहे।

आज की नारी महत्वाकांक्षाओं, अपेक्षाओं, अर्न्तद्वन्द्वों और तनावों में जूझती रहती है। नारी, मुक्ति की कामना करती है किन्तु परम्परागत संस्कारों को त्यागकर कदापि नहीं। मन्नू भण्डारी की नायिकायें त्रासदी से गुजरती हैं और समझौतावादी हैं। पति के विवाहेत्तर प्रेम सम्बन्धों पर रंजना परम्परागत भारतीय नारी की तरह ऑंसू नहीं निकालती बल्कि पति अमर से स्वयं को मुक्त कर लेती है। लेखिका ने अमला के रूप में परित्यक्ता नारी का चित्रण किया है। वह मानसिक अर्न्तद्वन्द्व के कारण आत्महत्या का मार्ग चुनती है। वह पत्नी, प्रेयसी, मित्र आदि बनी किन्तु असफल ही रही। **'स्वामी'** उपन्यास की मिनी आधुनिक नारी है। जिसमें नारी मुक्ति का प्रश्न उसकी स्वतन्त्रता के साथ समाप्त हो जाती है। अन्त में मन्नू भण्डारी की मिनी भारतीय पत्नी की भूमिका को आदर्श रूप प्रदान करती है। **'आपका बन्टी'** उपन्यास की शकुन चेतना सम्पन्न ऐसी नारी है जो परिवेश से टकराती है वो व्यक्ति को बदलती है, व्यवस्था को नहीं। **'महाभोज'** उपन्यास की रूक्मा गॉव की शिक्षित एवं जागरूक नारी है, जो बिसू के विचारों से प्रभावित होकर गॉव की अशिक्षित महिलाओं के प्रति जागरूक करती है। अतः मन्नू भण्डारी का कथा साहित्य नारी विमर्श, नारी मुक्ति का प्रस्थान बिन्दु माना जाता है।

आधुनिक युग का प्रेम व्यावसायिक, शारीरिक सम्बन्धों वाला, विवाहोत्तर सम्बन्धों वाला, प्रेमी से विवाह की अनिवार्यता न होने वाला, लिव इन रिलेशन की परम्परा आदि के रूप में हो गया है। 'यही सच है' कहानी की दीपा प्रेमी से निराश होकर दूसरे व्यक्ति संजय से प्रेम करने लगती है। दीपा में अर्न्तद्वन्द्व है कि निशीथ और संजय दोनों में किसके सच को स्वीकार किया जायं। दीपा अपने फूलदानरूपी मन में कभी निशीथ को सजाती है तो कभी संजय को। **'गीत का चुम्बन'** कहानी की गायिका कनिका और कवि निखिल में प्रेम हो जाता है। निखिल स्वच्छन्द प्रेमी है और कनिका परम्पराओं तथा संस्कारों में जीने वाली नारी है, वह अपने अनुसार अपना जीवन जीना चाहती है। **'एक कमजोर लड़की की कहानी'** की रूप मामा के मुँहबोले बेटे ललित से प्रेम करती है किन्तु विवाह होने पर विरोध नहीं कर पाती है। **'अभिनेता'** कहानी की रंजना दिलीप ओझा से प्रेम करने लगती है जो विवाहित है और एक बच्ची का पिता भी है। **'ऊँचाई'** कहानी की शिवानी एक आधुनिक विचारों वाली नारी है, जो विवाहपूर्व के प्रेमी अतुल से दो बच्चों की माँ बनने के बाद भी प्रेम करती है। **'स्त्री-सुबोधिनी'** कहानी की सुबोधिनी आधुनिक नारी है जो अपने विवाहित बॉस शिन्दे के प्रेम पाश में फँस जाती है। **'आते जाते यायावर'** की मिताली सहपाठी से प्रेम करती है तथा शारीरिक सम्बन्ध भी स्थापित कर लेती है। **'एक बार और'** कहानी की बिन्नी आधुनिक युवती है जो होटल में प्रेमी कुन्ज की पत्नी बनकर रहती है लेकिन कुन्ज विवाह मधु से करता है। **'चश्मे'** कहानी की शैल का प्रेम त्याग, सेवा, निष्ठा आदि पर आधारित है। **'घुटन'** कहानी की **'मोना'** ऐसी युवती है जो विषम परिस्थितियों में घुटने टेक देती है। **'आकाश के आईने में'** कहानी में सुषमा अपने प्रेम के लिए परिवार के विरोध से पीड़ित होती है। मन्नू भण्डारी की कहानियाँ, पुरूष सत्तात्मक व्यवस्था और विसंगतियों को बेनकाव करती है। **'यही सच है'** और **'ऊँचाई'** ऐसी प्रेम की कहानियाँ हैं जिन्हें नैतिक-अनैतिक ढाँचे में रखकर नहीं देखा जा सकता। **'गीतका चुम्बन'** कहानी आकांक्षा के द्वन्द्व की कहानी है जो पुराने और नवीन संस्कारों के बीच छटपटाती है।

मन्नू भण्डारी की कहॉनियॉं संयुक्त परिववार के बीच पनपती हैं। आज की नारी पारिवारिक समस्याओं में उलझी होने के कारण आधुनिक परिवेश में जीना चाहती है, इसलिए परम्परा को तोड़कर जी रही है। मन्नू भण्डारी की **'आकाश के आइने'** कहानी में संयुक्त परिवार में घुटती नारी का चित्रण, **'इनकम टैक्स और नींद'** कहानी में प्राचीन और नवीन विचारों में द्वन्द्व है। **'छत बनाने वाले'** कहानी में ताऊ रूढ़िवादी हैं, इसलिए ताई घूँघट में ढ़की मूक प्रतिमा है। **'संख्या के पार'** कहानी में संयुक्त परिवार के दुःख दर्द का वर्णन है, जिसे सहने के लिए नारी विवश है। मन्नू भण्डारी का विचार है कि आधुनिक जीवन की समस्याओं का समाधान परम्परागत मूल्यों से नहीं प्रत्युत आधुनिक मूल्यों से ही हो कसता है।

स्वतन्त्र भारत में पाश्चात्य सभ्यता और शिक्षा से नारी जागरूक हुई तथा उसने कामकाजी बनकर अपने व्यक्तित्व को निखारा है। वर्तमान में कामकाजी नारी घर और नौकरी का दोहरा दायित्व सम्भालती है तो उसके सामने अनेक प्रकार की समस्यायें आती हैं। मन्नू भण्डारी ने कामकाजी नारी के व्यक्तित्व को उजागर किया है जिसमें उनके संघर्ष का चित्रण किया गया है। **'क्षय'** कहानी में कुन्ती अविवाहित कामकाजी नारी है जो किसी भी कीमत पर अपने सिद्धान्तों, आदर्शों का परित्याग नहीं करती। **'घुटन'** कहानी की अविवाहित कामकाजी नारी **'मोना'** पारिवारिक दायित्व के कारण दम तोड़ देती है। **'आकाश के आइने में'** कहानी में सुषमा माता-पिता का विरोध करके प्रेमी से कोर्ट-मैरिज कर लेती है। इसी प्रकार **'नई नौकरी'** की रमा **'कमरे कमरा और कमरे'** की नीलिमा **'बन्द दराजों का साथ'** की मंजरी आदि ऐसी कामकाजी नारियाँ हैं जिनका जीवन एक त्रासदी है। मन्नू भण्डारी ने **'नशा'** और **'रानी माँ का चबूतरा'** कहानी में परिश्रमी नारी के संघर्ष को प्रस्तुत किया है।

मन्नू भण्डारी की कहानियों में आधुनिक नारी की वैयक्तिक अस्मिता उजागर हुई है। **'ईसा के घर इंसान'** कहानी में नन्स एंजिला फादर की अलौकिक दिव्यता का पर्दाफाश करके धर्म के प्रति नारी शोषण का विरोध करती है। **'जीती ब़ाजी की हार'** कहानी में आशा, नलिनी और मुरला अपने स्वतन्त्र व्यक्तित्व और अपनी अस्मिता के प्रति जागरूक रहती है। **'दीवार बच्चे और बरसात'** कहानी की नायिका शिक्षित है, नवजागृति से प्रभावित है, स्वतन्त्र विचारों वाली है। अतः नारियों की आत्मनिर्भरता की प्रबल समर्थक है। **'रानी माँ का चबूतरा'** कहानी की नारी गुलाबी आत्मविश्वास से भरी है। वह अपनी वैयक्तिक अस्मिता के लिए पति और समाज से टक्कर लेती है। **'क्षय'** कहानी में पिता के रोगी हो जाने पर परिवार का दायित्व बड़ी बेटी कुन्ती संभालती है। इसी प्रकार **'हार' 'नई नौकरी' 'कमरे कमरा और कमरे' 'बन्द दराजों कासाथ'** और **'दरार भरने की दरार'** कहानियों में नारी के स्वतन्त्र अस्तित्व एवं व्यक्तित्व का चित्रण है। आधुनिक शिक्षित आत्मनिर्भर नारियॉं यह समझ नहीं पाती कि उन्हें मुक्ति किससे चाहिए। वैयक्तिक अस्मिता का नवीन मूल्य नारी में पनप रहा है।

मन्नू भण्डारी की आत्मकथा में प्रेम त्रिकोण है जिसमें मन्नू राजेन्द्र और मोती है। मन्नू भण्डारी ने राजेन्द्र के सम्बन्ध में यह स्वीकार किया है कि पति को पत्नी के रूप में एक नर्स चाहिए, जो पति की सेवा करती रहे, बदले में पति से कोई अपेक्षा न करे। स्त्री विमर्श के समर्थक राजेन्द्र का असली रूप देखकर लेखिका को आश्चर्य होता है। यह आत्मकथा लेखिका के व्यक्तिगत और लेखकीय जीवन का कटु और मधुर यथार्थ का स्पष्ट आईना है। मन्नू भण्डारी की आत्मकथा में मध्यवर्गीय समाज की नारी की विडम्बनाओं, तनावों, कटुताओं और समस्याओं

का चित्रण है। मन्नू भण्डारी स्वयं को नारी वादी लेखिका नहीं मानतीं पर नारी जीवन की व्यथा कथा ही लिखती हैं। मन्नू भण्डारी ने अपने परिवार में पिता को पुरूषसत्तात्मक स्थिति में और माता को पति और बच्चों की इच्छा पूर्ति करने वाली मशीन की तरह देखा है। इस प्रकार परिवार में लिंग भेद बना रहता है।

स्त्री आज भी पत्नी, माँ, बहन, चाची, ताई, बुआ और भाभी आदि रिश्तों से पहचानी जाती है। जबकि उसकी भी स्वतन्त्र सत्ता है, उसकी अपनी अस्मिता है और वह समाज की जीवन्त इकाई है। आज की नारी पति-परमेश्वर को चुनौती दे रही है क्योंकि स्थिति असह्य हो गयी है। मन्नू भण्डारी जब प्रेमचन्द सृजन पीठ संभालती है तो उस समय राजेन्द्र आहत होते हैं। लेखिका को जो सन्तोष मिलता है। निर्णय लेने का अधिकार केवल पुरूष को ही नहीं बल्कि नारी को भी है। लेखिका यह स्पष्ट करती है कि हर लेखक, कवि और समीक्षक को एक देहवादी मीता की आवश्यकता होती है। इस प्रकार स्त्री रचनाकारों की आत्मकथायें पितृसत्तात्मक समाज की विद्रूपताओं को उजागर करती हैं। इस दृष्टि से मननू भण्डारी की आत्मकथा एक वैशिष्ट्य है जिससे नारी विमर्श उजागर होता है।

मन्नू भण्डारी ने लेख नहीं लिखे हैं ऐसा उनके साक्षात्कार से स्पष्ट हुआ है। लेखिका ने अपने साक्षात्कार में नारी-विमर्श के सम्बन्ध में जो विचार प्रस्तुत किए हैं उन पर दृष्टिपात करने पर ज्ञात होता है कि मन्नू भण्डारी आधुनिक नारीवादी आन्दोलन की पूर्ण समर्थक नहीं हैं। फिर भी वह यह स्वीकार करती हैं कि नारी का स्थान दोयम दर्जे का है। वह नारी विमर्श के शोर-शराबे और नारेबाजी से सहमत नहीं हैं। देह मुक्ति ही नारी मुक्ति की पहली सीढ़ी है से नारी पतन की ओर जाती है। सैक्स के बाद पुरूष की देह पवित्र रहती है किन्तु स्त्री अपवित्र हो जाती है, मन्नू भण्डारी इस सोच का विरोध करती हैं।

आज नारी विमर्श में परिवर्तन आया है क्योंकि आज नारी शिक्षित है, आर्थिक रूप से स्वतन्त्र है तथा उच्च पदों पर कार्यरत है। फिर भी स्त्री का स्थान दोयम दर्जे का है। सामन्ती संस्कार की भावना पुरूष में है इस भावना से पुरूष जब तक मुक्त नहीं होगा तब तक स्त्री को अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करना पड़ेगा। अतः नारी विमर्श का एक मात्र उद्देश्य नारी को संघर्ष करने की प्रेरणा, प्रोत्साहन और शक्ति देना है।

मन्नू भण्डारी आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य के उन गिने-चुने जागरूक तथा संवेदनशील कथाकारों में हैं जिन्होंने अपनी कृतियों में **'नारी जीवन'** का सशक्त और यथार्थ चित्रण किया है। मन्नू भण्डारी नारी की दशा एवं दिशा का मार्मिक चित्रण कर पुरूष के वर्चस्ववादी समाज में नारी की मुक्ति के सवाल को गम्भीरता के साथ उठाती है। उन्होंने नारी-विमर्श को एक नया अर्थ देते हुए नारी अस्मिता के प्रश्नों को बड़ी गम्भीरता तथा मुखरता के साथ चित्रित किया है। इसलिए आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य में नारी-विमर्श को गम्भीरतापूर्वक स्थापित करने का श्रेय मन्नू भण्डारी को दिया जा सकता है। वह नारियों की स्थितियों, परिस्थितियों के सूक्ष्म ऑकलन तथा कुशल प्रस्तुतीकरण में सिद्धहस्त है, उनके रचना संसार से गुजरते हुए नारी के अस्तित्व के उन तमाम पक्षों से साक्षात्कार का अवसर मिलता है जिन्हें समझे बिना नारी के पूरे बजूद को समझ पाना कठिन है। मन्नू भण्डारी का कथा संसार नारी-मुक्ति आन्दोलन का बीज मन्त्र है जो नारी-विमर्श के नाम पर दिग्भ्रमित होने वालों को सही राह पर अग्रसर करता है। उन्होंने बहुत ज्यादा नहीं लिखा पर जो लिखा है वो तन्मयता, गहरी संलग्नता और ईमानदारी से लिखा है। उसमें **'नारी-जीवन'** का यथार्थ सहजता आत्मीयता और बारीकी से झलकता है। मन्नू भण्डारी ने इसीलिए तो कम लिखकर भी उच्च कोटि के साहित्यकारों में स्थान बना लिया है। मन्नू भण्डारी का कथा-साहित्य एवं संसार वास्तव में उच्च नारी-विमर्श के सम्बन्ध में अत्यन्त ही उच्च कोटि का माना जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ-

1. मैं हार गई (१९५७) मन्नू भंडारी,राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली।
2. यही सच है (१९५७) मन्नू भंडारी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. औरत एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (२००६)ज्ञानेन्द्र रावत, विश्वभारती प्रकाशन दिल्ली।
4. हिन्दी कहानी (१९६८) इन्द्रनाथ मदान राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली।
5. हिन्दी साहित्य का इतिहास (१९७६) डॉ० नगेन्द्र, एन. पी. एच, नई दिल्ली।